Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.889, Volume 12, No. 03, July-September 2022, pp. 124-128

जनसंचार एवं हिन्दी पत्रकारिता

डॉ. अपर्णा शर्मा*

प्रस्तावना

लोकतन्त्र में जन–संचार माध्यमों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है अतः संचार माध्यमों को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा गया है। वर्तमान समय में संचार क्रान्ति अपनी चरम सीमा पर है। संचार माध्यमों एंव इलैक्ट्रानिकीय क्रान्ति ने विश्व जनसमुदाय को एक सूत्र में पिरोने का चमत्कारिक कार्य किया है। यह संचार क्रान्ति चाहे उपग्रहीय हो अथवा माइक्रोवेवी अथवा कम्प्यूटरीय एक नई दुनिया का सृजन करती है। यह दुनिया लगातार सिमटती जा रही है। 'मार्शन मकलुहान' इसे ग्लोबल विलेज कहते है तो तकनीकी विषेशज्ञ इसे कम्प्यूटर नेटवर्क की दुनिया कहते है।

संचार माध्यम अंग्रेजी के मीडिया (MEDIA) शब्द से बना है जिसका आश्य है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला चूंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और संचार सामाजिकता की पहली शर्त है भाव और विचार के आदान–प्रदान की विभिन्न प्रक्रियाओं और अनेक माध्यमों के द्वारा ही जनसंचार की परिकल्पना की गई। वैश्वीकरण और बाजारवाद की आँधी के चलते और तकनीकी संसाधनों की आम जनता के बीच पहुॅच के कारण विभिन्न इलैक्ट्रानिक माध्यम अब सामाजिक बाजार में छा गए है।

संचार शब्द संस्कृत की चर् धातु से निर्मित शब्द है इस धातु का अर्थ चलना होता है इसमें सम् उपसर्ग और आ प्रत्यय के योग से बना है' जिसका अर्थ सम्यक ढंग से चलना होता है यह शब्द अंग्रेजी के COMMUNICATION शब्द का हिन्दी पर्याय है।

संचार– प्रसार शिक्षा का एक आवश्यक अंग है प्रसार एक शैक्षणिक प्रक्रिया है जिसमें उपयोग ज्ञान को लोगों तक संचारित किया जाता है। संचार मानव समुदाय के जीवन की वह धुरी है, जिसके द्वारा मानव के सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण एंव विकास होता है संचार के बिना मानव के सामाजिक जीवन की कल्पना नही कर सकते है। संचार प्रकिया का प्रारम्भ शिशु के जन्म से होता है और उसका अन्त मनुष्य जीवन के अन्त से ही होता है इस तरह संचार जीवन का अभिन्न अंग है संचार का सार्थक होना आवश्यक है इसके अन्तर्गत अनुभवों का आदान–प्रदान किया जाता है यही आदान–प्रदान की क्रिया प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्पन्न होती है। संदेश को सम्प्रेषित किया जाता है सन्देश में अनुभव, वर्तमान व्यवहार एंव भविष्य की आवश्यकता निहित है इस प्रकार सम्प्रेषण के द्वारा दो व्यक्तियों में सार्थकता का निर्माण होता है संचार व्यक्तियों के व्यवहारों को भी प्रवाहित करता है।

संचार प्रत्येक समाज की अनिवार्य आवश्यकता है संचार के अभाव में न तो मानव समाज की स्थापना हो सकती है और न ही मनुष्य की समाजिक व्यवस्था संभव है। संचार के अभाव में व्यक्ति अपने तक ही सीमित होगा।

* सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, सुबोध पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

सम्प्रेष्ण समाज की प्रगति का जीवन्त उदाहरण है आदिम काल से लेकर वर्तमान काल तक यह एक अनिवार्य आवश्यकता बनकर उभरा है पहले प्रतीकों और हाव–भाव के माध्यम से व्यक्ति अपनी बात सम्प्रेषित करता था। आज तकनीकी विकास के फलस्वरूप सम्प्रेषण के रूप एंव तरीके अधिक विशिष्ट हो गए है। रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट आदि प्रणालियों ने पूरे विश्व को पास–पास ला दिया है चाँद पर पहुँचा व्यक्ति बड़े आराम से धरती पर अपनी बात कर सकता है। सम्प्रेषण एक अनवरत प्रक्रिया का परिणाम है जिससे धरों में, व्यवसाय में, आपस में एक–दूसरे से सम्प्रेषण होता है। यदि हम लोग एक–दूसरे से बात ही नही करें तो हम दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को जान ही नही पायेंगे। सम्प्रेषण में सूचना, आदेश, निर्देश, सलाह, शिक्षा, प्रेरणा, चेतावनी आदि सभी में गूढ़ रहस्य छिपे है अतः यह कभी न खत्म होने वाला लिलिस्य है जहॉ भावों के गहन सागर में विचारों की तरंगे उठती है। सम्प्रेषण एक दोहरी प्रक्रिया है इसमें क्रिया की प्रतिक्रिया होती है जब तक संदेश की प्रतिक्रिया नही आती तब तक यह प्रक्रिया अधूरी रहती है। सम्प्रेषण विज्ञान भी है और कला भी है। सूचना क्रान्ति के फलस्वरूप यह विज्ञान है और अन्य क्षेत्रो में कला। भावनाओं की अभिव्यक्ति या व्यावसायिक बातचीत आदि का आदान–प्रदान सम्प्रेषण द्वारा ही होता है अतः यह एक विज्ञान भी है और कला भी, विज्ञान और कला दोनो को यदि मिला दिया जाए तभी सम्प्रेषण प्रभावशाली सिद्व होगा। सम्प्रेषण प्रकृति द्वारा प्रदत्त गुण है मनुष्य जन्म से ही यह प्रारम्भ होता है और धीरे–धीरे विकसित होकर यह गुण व्यक्ति के व्यक्तित्व का आईना बन जाता है। समाज में व्यक्ति की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति सम्प्रेषण द्वारा ही होती है अतः यह मानवीय एंव सामाजिक प्रक्रिया है। सम्प्रेषण के सिद्वान्त भी सार्वभौमिक होते है यद्यपि कई बार भाषा की समस्या सामने आती है फिर भी यदि कुशल सम्प्रेषक है तो अपनी बात को लोंगो तक पहुँचाने में सफल होता है।

संचार और सम्प्रेषण एक–दूसरे पर आधारित होते है मानव संचार मुख्य रूप से चार स्तरों पर होता है जिसमें अन्तःवैयक्तिव या स्वगत संचार प्रमुख है यह संचार तब होता है जब कोई व्यक्ति अपने भीतर ही कुछ सोचता है या स्वंय से ही बात कर रहा हो सामान्यतया रचनात्मक लेखन से सम्बद्व रहने वाला व्यक्ति इस तरह का संचार करता है कि व्यक्ति स्वंय ही किसी विचार या भाव को संप्रेषित करता है और फिर उस भाव या विचार का विश्लेषण कर उसका परिणाम या प्रभाव भी लक्षित करता है यह एक मनौविज्ञानिक प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया में संचार की सफलता व्यक्ति की स्वंय की क्षमता पर निर्भर करती है एंव अन्तवैयक्तिक संचार में एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के विचारों, मतों, भावनाओं के आदान–प्रदान से होता है यह आमने–सामने होता है चूँकि यह दो व्यक्तियों के सम्पर्क से होता है यह कहीं भी तथा किसी स्वर, शाब्दिक, संगीत, चित्र, ड्रामा, लोककला आदि माध्यमों से हो सकता है। संचार की इस स्थिति में दोनो व्यक्ति परस्पर एक–दूसरे से परिचित होते है इसमें संचार एकतरफा भी हो सकता है तथा दोतरफा भी, इस संचार में दोनो व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से एक–दूसरे के सामने हो भी सकते है और नही भी, ये आमने–सामने बैठकर या टेलीफोन, मोबाइल, पेजर, इंटरनेट आदि विभिन्न माध्यमों से अपना संदेश दूसरों तक पहुँचाते है। समूह संचार के अन्तर्गत जब एक व्यक्ति का दो या दो से अधिक व्यक्तियों से वाद–विवाद, विचार–विमर्श, सभा–गोष्ठी, सार्वजनिक व्याख्यान, कार्य–शिविर, इंटरव्यू आदि द्वारा विचारों का आदान–प्रदान होता है। यह संचार बहुत प्रभावी है क्योंकि इसमे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व सबके सामने आता है समूह संचार किसी भी उपयुक्त सामाजिक परिवेष से संप्रेषित हो सकता है जैसे स्कूल, कॉलेज, प्रशिक्षण केन्द्र, रंग–मंच, चौपाल, कमेटी हाल आदि। जनसंचार में संदेशों को जन–समुदाय तक संप्रेषित किया जाता है इस जन–समुदाय में सभी वर्ग, वर्ण, जाति, सम्प्रदाय और विचारधारा आदि के लोग सम्मिलित होते है इसके लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है ये माध्यम मुद्रित या इलेक्ट्रानिक किसी भी प्रकार के हो सकते है जैसे समाचार पत्र, पुस्तकें, रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकार्डर, यूवी, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि।

संचार के बिना मानव समाज की सत्ता अस्तित्वहीन है मानव समाज की गति और प्रगति का मुख्य आधार संचार ही है जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र हो जो संचार के दायरे में न आता हो संचार आज सरकार और आम नागरिकों के मध्य एक निर्णायक ताकत बनकर उभरा है सूचना तंत्र के द्वारा एक–एक विचारधारा सबके सामने प्रकट हो पायी है इसके अतिरिक्त संचार माध्यम लोगों को शिक्षित एंव जागरूक भी बनाते है।

संचार के माध्यम

सूचनाओ, समाचारों और विचारों को अनेक माध्यमों से जनसाधारण तक पहुँचाना ही जनसंचार है भारत में सूचना प्रेषित करने के अनेक साघन मौजूद है जैसे कथा संकीर्तन, रास, लोकनृत्य, लोकसंगीत, नौटंकी, रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य। आज हम संचार की जिस आधारशिला पर खड़े है वह भी स्थिर और स्थायी नही है क्योंकि विकास प्रक्रिया संचार माध्यमों के स्वरूप को भी बदलती रहती है आज तक का संचार माध्यम हजारों वर्षो के विकास का परिणाम है लेकिन वह अंतिम नही यह माध्यम सामाजिक है जो समाज के व्यक्ति को एक–दूसरे के निकट लाता है चर्चा, परिचर्चा, गोष्ठी, सम्मेलन, मेले, प्रदर्शनी आदि सभी इसी माध्यम में आते है।

प्राचीन भारत में संत, साधू, चारण, भाट, साहित्य सभा, समिति, शास्त्रार्थ राजा की धोषणाएँ, दूत, संदेश–वाहक प्रमुख थे जो संचार माध्यम का कार्य करते थे। वैदिक कालीन समाज में अनेक जनजातीय व्यवस्थापिकाओं का भी वर्णन मिलता है इसमें विषय, सभा और समिति मुख्य थे वह जाति व्यवस्था एक तरह से संचार माध्यम का काम करती थी। उत्तर वैदिक काल में परिषद तथा गढ़ सभाओं का प्रादुर्भाव हुआ। आधुनिक काल में सूचना राजनीतिक शक्ति और शिव की समृद्वि के रूप में समाज और अर्थतंत्र के साथ गहरे सम्बन्ध स्थापित कर चूकि है सूचना के कारण ही विश्व में अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ नए सिरे से लिखी जा रही है।

वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के दौर में सूचना तंत्र के विकास ने भी विश्व को गहरे तक प्रभावित किया। नई–नई तकनीकों के आने से सूचना तंत्र ने आधुनिक जीवन की प्रत्येक गतिविधि को तीव्र गति से विश्व–समाज के सामने सहजता से पहुँचा दिया। समाचार–पत्रों एंव पत्रिकाओं के बाद आधुनिक संसाधनों से युक्त होने के उपरान्त इस संचार तंत्र ने रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, कम्प्यूटर, टेलिफोन, मोबाइल फोन, इंटरनेट इलैक्ट्रॉनिक डाक व्यवस्था आदि विभिन्न माध्यमों से जीवन के यथार्थ को इस तरह अभिव्यक्त किया कि उसमें शेष क्या है ? इस शब्द की कोई संभावना नही बची।

साहित्य एंव पत्रकारिता का धनिष्ठ सम्बन्ध है साहित्य जहॉ समाज का दर्पण है वही पत्रकारिता भी पूरी तरह समाज से ही सम्बद्व है मनुष्य का विकास सभ्यता के मार्ग में विभिन्न चरणों में हुआ है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव की प्रवति जिज्ञासु हुई और उसने अनेक अविष्कार किए। मुद्रण का अविष्कार भी इसमें आता है। आज का संकुल समाज समस्याओं से धिरा हुआ है संचार माध्यमों के फलस्वरूप यद्वपि दुनिया छोटी होकर रह गई है पत्रकारिता का इसमें विशेष योगदान है। समाचार से ही पत्रकारिता का आरंभ होता है।

पत्र–पत्रिकाओं का आरंभ भी आधुनिक काल में प्रेस की स्थापना के बाद से ही माना जाता है। राजा–महाराजा जनसंचार की जानकारी शिलालेखों, धोषणाओं, वाद्यों आदि से किया करते थे। लोक सूचनाओं को हाथ से लिखते थे। मुगलकाल में राजाज्ञा लिखने वाले को वाक्यानवीस कहते थे बहादुरशाह के समय में 'सिरज उल' अखबार निकालने की सूचना मिलती है। सर्वप्रथम जब भारत में विदेशी आए तो इनका एकमात्र उद्देश्य व्यापार करना था। कालान्तर में धर्म प्रचार के लिए ईसाई भिरानारियों ने कुछ कार्य शुरू किए पहली प्रेस गोवा में सन् 1550 ई में स्थापित हुआ फिर धीरे–धीरे मद्रास, मालावार, कलकत्ता, तंजोर आदि स्थानों में प्रेसों की स्थापना हुई। हमारे देश में पहला समाचार पत्र अंग्रजी में 1890 ई का बंगाल गजट है। बंगाल विदेशियों के आगमन का मुख्य केन्द्र था। अतः 'दिग्दर्शन' नामक मासिक पत्र 1817 ई में छपा जो बंगला भाषा में था। बंगला में ही 'संवाद कौमुदी' नामक पत्रिका आई 1826 ई में 'पंडित युगल किशोर शुक्ल' के सम्पादकत्व में हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ उसके बाद राजाराममोहन राय ने 'बंगदूत' का प्रकाशन किया। 1845 ई में काशी नगरी से 'बनारस' समाचार पत्र निकाला। वाराणासी से शुद्व हिन्दी अखबार 'सुधाकर' निकला फिर तो समाचार पत्रों का सिलसिला आगे बढ़ने लगा जिसमें 'भारतेन्दु हरिशचन्द' का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाता है। भारतेन्दु काल के काव्य, नाटक, गध–पध से हिन्दी साहित्य की प्रगति हुई। भारतेन्दु को नवजागरण का अग्रदूत कहा जाता है इनकी मौलिक और अनूदित कृतियों की संख्या लगभग 69 है। भारतेन्दु ने

अपने विचारों को पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से सामान्य जनता तक पहुँचाया इनकी प्रसिद्व पत्रिका 'कविवचन सुधा' है। 1875 ई में 'हरि चन्द्र' मैंगजीन निकली 1868 ई के बाद कई पत्रिकाएँ निकली जैसे हिन्दु प्रकाश, प्रयागदूत, बिहार बन्धु, सुलभ समाचार, भारत पत्रिका, आनंद लहरी, काशीपत्रिका, नागरी पत्रिका, जयपुर गजट, भारतेन्दु वृन्दावन, काशी समाचार, इन्दु आर्यावर्त एंव भारतोद्दय आदि कुछ शुद्व साहित्यिक पत्रिकाएँ भी थी। जिनमें 1897 ई की 'नागरी प्रचारणी प्रत्रिका प्रमुख थी। इसी श्रंखला में 1900 ई में 'सरस्वती पत्रिका' इलाहाबाद से प्रकाशित हुई जो राधाकृष्णदास, जगन्नाथदास रत्नाकर एंव किशोरीलाल, श्यामसुन्दरदास के संपादन में निकली। 1901 ई में समालोचक पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है जिसके सम्पादक चन्द्रधर शर्मा गुलेरी थे। इसी तरह 1904 ई में गढ़वाल समाचार, 1905 ई में संगीतामृत प्रवाह लाहौर से, 1907 ई में अम्युदय प्रयाग मालवीय जी हिन्दी केसरी, 1909 ई में कर्मयोगी प्रयाग, 1913 ई में प्रभा पत्रिकाएँ निकलीं इन दो दशकों में ऐसी पत्रिकाएँ आयी जो मुख्यातः साहित्यिक एंव राजनीतिक थी। यह गतिविधियाँ 1940 ई तक चलती रही एक ओर साहित्यिक क्षेत्र में विकास हो रहा था तो दूसरी ओर स्वाधीनता संग्राम में भी नई चेतना आ चुकी थी।

हिन्दी पत्रकारिता में कई पत्रिकाएँ भी उल्लेखनीय है जिनमें 1925 ई में धार्मिक पत्रिका 'कल्याण' का भी प्रकाशन हुआ। 1926 ई का हिन्दु पंच हिन्दु विचारधारा का पत्र था। 1927 ई की सुधा, 1928 ई का विशाल भारत वीणा तथा वीणा के बाद हंस का प्रकाशन हुआ। इनके अतिरिक्त योगी, नवशक्ति, हयाय, विश्वभारती, सुदर्शन, राष्ट्र संदेश आदि प्रचलित पत्रिकाएँ थी। सन् 1947 ई के बाद साहित्य के क्षेत्र में कई वाद उभरे और राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव बढ़ा इनमें कर्मवीर, सारथी, वीणा नया समाज, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, दिनमान, पॉचजन्य आदि मुख्य है।

साहित्य के क्षेत्र में हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, प्रसाद जी एंव आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपना अविस्मरणीय योगदान दिया इन लेखकों ने अपने लेखन द्वारा आम जनता तक शुभ संदेश पहुँचाया।

जनसंचार माध्यम के रूप में पत्रकारिता में हिन्दी

पत्रकारिता आधुनिक ज्ञान की एक ऐसी विद्या के रूप में प्रतिष्ठित है जिसमें सत्यं– शिंव– सुन्दरम का उद्धोष है जो समय और समाज के संदर्भ में सचेतन दृष्टि रखती है और आम जन एंव सत्ताधीशों को अपने दायित्व के प्रति हमें सचेत करती है आज पत्रकारिता के अनेक रूप हमारे सामने है विशेषकर हिन्दी के संदर्भ में आज विशेष नवीनता लेकर उपस्थित है आज देश में 98 प्रतिशत जनता हिन्दी जानती है और बोलती है पत्रकारिता में हिन्दी की सरलता ने सबको आकृष्ट किया है हिन्दी के शब्द इसकी ध्वनियाँ, अर्थ, वाक्यादि की विशिष्टता के कारण पत्रकारिता के जगत को बड़ी सुविधा मिली है हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप तो पत्रकारिता में नयापन देखने को मिलता है मानव हिन्दी का खूब प्रचार–प्रसार हो रहा है। मानक हिन्दी का साहित्य, साहित्यशास्त्र, व्याकरण तथा अनेक विषयक शब्द–यंगर पर्याप्त समृद्व है अनेक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वर्गो की यह अधिकृत व्यवहार भाषा है।

हिन्दी शौर सैनी अपभ्रंश से प्रसूत हुई अपभ्रंशो के स्थान भेद के कारण उसकी अन्य बोलियों का भी विकास हुआ अर्थात अपभ्रंश के क्रोड़ से हिन्दी का जन्म हुआ। 12 वीं शती तक निश्चित रूप से अपभ्रंश भाषा ही पुरानी हिन्दी के रूप में चलती रही इस काल की भाषा के तीन रूप है। एक रूप में राजस्थान के चारणों द्वारा लिखित साहित्य है डिंगल भाषा में पृथ्वीराज रासो व वीसलदेव रासो उल्लेखनीय ग्रंथ है डिंगल से भी व्यापक दूसरा रूप था जिसे पिंगल कहा गया तीसरे रूप में डिंगल–पिंगल के अतिरिक्त दिल्ली मेरठ की एक बोली जिसे कालान्तर में हिन्दवी कहा गया जो अमीर खुसरो की वाणी में प्रस्फुटित हुई इसी का अभिप्राय आज की खड़ी बोली से है। हिन्दी पत्रकारिता में साहित्यिक पत्रिका का क्षेत्र भी व्यापक है। साहित्यिक क्षेत्र में भाषा, भाषा सम्बन्धी विचार, काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, आलोचनाओं, संगोष्ठियों, पुस्तक समीक्षाओं, पात्रा, वृक्षों, विविध कार्यक्रमों, अनुबंधान एंव शोध को शामिल किया जा सकता है।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा की विलक्षणताएँ सबसे अधिक विज्ञापन के क्षेत्र में दिखाई देती है। आज के युग में विज्ञापन बनाना भी एक कला है अतः आज के हिन्दी समाचार , पत्र–पत्रिकाओं में जो लिखित रूप में है अनेक विशेषताओं से युक्त है। भाषा के क्षेत्र में हमारे देश में सर्वाधिक प्रयोग हिन्दी में ही हो रहे है अतः हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य बहुत अधिक सुदृढ़ है।

निर्ष्कतः यह कहा जा सकता है कि जनसंचार की भूमिका में हिन्दी पत्रकारिता बहुत बड़ा योगदान दे रही है दोनो एक–दूसरे से सम्बद्व है।

सन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

1. 'ए.ए हाशमी' – पुस्तक महल दिल्ली
2. संचार सिद्वान्त की रूपरेखा – डॉ. प्रेमचन्द पचौरी
3. भारतीय पत्रकारिता – कल, आज और कल – लेखक – सुरेश गौतम/वीना गौतम
4. पत्रकारिता एवं संपादन कला – लेखिका – नेहा वर्मा
5. संचार से जनसंचार और जनसंपर्क तक – लेखक – बलवीर कुंदरा
6. प्रयोजनमूलक हिंदी – लेखक – विजय कुलश्रेष्ठ

♦❐♦